नकबा की पचहत्तरवीं सालगिरह

कविता कृष्णपल्लवी

फिलिस्तीन का अवाम 1948 के उस दिन को कभी नहीं भूल सकता जब जायनवादी फासिस्ट गुण्डों के सशस्त्र दस्ते और जायनवादी कृत्रिम राज्य इस्राइल की नवगठित सेना फिलिस्तीनी बस्तियों पर टूट पड़ी थी। तक़रीबन तीन चौथाई फिलिस्तीनी अपने घरों से दर-ब-दर कर दिये गये। तबसे लेकर आज तक जायनवादी फासिज्म और साम्राज्यवाद का जैसा कहर फिलिस्तीनी क़ौम ने लगातार झेला है, वैसा दूसरे विश्वयुद्ध के बाद दुनिया के किसी भी देश के लोगों ने नहीं भुगता। फिलिस्तीन की छाती पर एक बर्बर कृत्रिम देश आज भी अगर जमा बैठा है तो इसका कारण अमेरिका और पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों की अकूत सामरिक और आर्थिक मदद के साथ ही अरब देशों के शेखों और शाहों तथा निरंकुश बुर्जुआ शासकों का विश्वासघात भी है। इन देशों के शासकों ने फिलिस्तीनी अवाम के संघर्षों को मदद की भी तो अपनी शर्तों पर की और उसे अपने मोहरों की तरह इस्तेमाल करना चाहा। सोवियत संघ के विघटन के बाद नवउदारवाद और वैश्विक दक्षिणपंथी उभार के जारी दौर में एशिया-अफ्रीका-लातिन अमेरिका के अधिकांश देशों ने भी पश्चिमी दबाव के आगे घुटने टेकते हुए फिलिस्तीनी अवाम के समर्थन से मुंह मोड़ लिया है और जायनवादी फासिस्टों के साथ अपने रिश्ते गाढ़ा करने लग गये हैं। लेकिन बेमिसाल बहादुरी और कुर्बानी की ऐतिहासिक नज़ीर पेश करते हुए फिलिस्तीनी कौम ने अपना मुक्ति संग्राम आज भी जारी रखा हुआ है। फिलिस्तीनी जनता अपना बहादुराना संघर्ष फ़तेहयाब होने तक चलाती रहेगी। यह एक अटल सत्य है।

इस अवसर पर मैं फिलिस्तीनी जनता के बहादुराना संघर्ष को इंक़लाबी सलामी देते हुए अपनी दो कविताएं प्रस्तुत कर रही हूं जो उस समय लिखी गयी थीं जब 2014 में जायनवादी फासिस्ट आदमखोर ग़ाज़ा पट्टी पर कहर बरपा कर रहे थे!

ग़ाज़ा के एक बच्चे की कविता

बाबा! मैं दौड़ नहीं पा रहा हूं।
ख़ून सनी मिट्टी से लथपथ
मेरे जूते बहुत भारी हो गये हैं।
मेरी आंखें अंधी होती जा रही हैं
आसमान से बरसती आग की चकाचौंध से।
बाबा! मेरे हाथ अभी पत्थर
बहुत दूर तक नहीं फेंक पाते
और मेरे पंख भी अभी बहुत छोटे हैं।

बाबा! गलियों में बिखरे मलबे के बीच
छुपम-छुपाई खेलते
कहां चले गये मेरे तीनों भाई?
और वे तीन छोटे-छोटे ताबूत उठाये
दोस्तों और पड़ोसियों के साथ तुम कहां गये थे?
मैं डर गया था बाबा कि तुम्हें
पकड़ लिया गया होगा
और कहीं किसी गुमनाम अंधेरी जगह में
बन्द कर दिया गया होगा
जैसा हुआ अहमद, माजिद और सफ़ी के
अब्बाओं के साथ।
मैं डर गया था बाबा कि
मुझे तुम्हारे बिना ही जीना पड़ेगा
जैसे मैं जीता हूं अम्मी के बिना
उनके दुपट्टे के दूध सने साये और लोरियों की
यादों के साथ।
मैं नहीं जानता बाबा कि वे लोग
क्यों जला देते हैं जैतून के बागों को,
नहीं जानता कि हमारी बस्तियों का मलबा
हटाया क्यों नहीं गया अब तक
और नये घर बनाये क्यों नहीं गये अब तक!
बाबा! इस बहुत बड़ी दुनिया में
बहुत सारे बच्चे होंगे हमारे ही जैसे
और उनके भी वालिदैन होंगे।
जो उन्हें ढेरों प्यार देते होंगे।
बाबा! क्या कभी वे हमारे बारे में भी सोचते होंगे?

बाबा! मैं समन्दर किनारे जा रहा हूं
फुटबाल खेलने।
अगर मुझे बहुत देर हो जाये
तो तुम लेने ज़रूर आ जाना।
तुम मुझे गोद में उठाकर लाना
और एक बड़े से ताबूत में सुलाना
ताकि मैं उसमें बड़ा होता रहूं।
तुम मुझे अमन-चैन के दिनों का
एक पुरसुकून नग़्मा सुनाना,
जैतून के एक पौधे को दरख़्त बनते
देखते रहना
और धरती की गोद में
मेरे बड़े होने का इन्तज़ार करना।
**

फिलिस्तीन

जुल्म और मौत के काले, अंधेरे समन्दर में
लहरों से जूझती कश्तियों के तने हुए पालों के ऊपर
सिर उठाये चमकती हैं
शहादतों की कंदीलें
दुनिया को पुकारती हुई,
अन्याय के विरुद्ध
अनवरत संघर्ष का संदेश
सभी जीवित दिलों तक भेजती हुई!

व्यंग्य / एक भक्त कथा

कविता कृष्णपल्लवी

एक भक्त है! कभी-कभी वह झगड़े के मूड में न होकर कुछ जिज्ञासा-शमन के भाव से मिलता है!

एक दिन वह बोला, "हे नास्तिक, कुमार्गी, देशद्रोहिणी बहन! एक बात बताओ! तुम लोग हम लोगों को भक्त कहते हो क्योंकि हम मोदीजी की भक्ति करते हैं अंधभक्त कहते हो क्योंकि हम उनकी बात आँख मूँदकर मानते हैं! पर यह अंडभक्त क्या होता है?"

मैंने कहा, "हे मस्तिष्क-रिक्त भ्राता, मनुष्यरूपेण गोशावक! मैं तुम्हारी बाल-सुलभ उत्सुकता को शांत करने के लिए स्वामी रामकृष्ण परमहंस द्वारा सुनाई गयी एक कथा सुनाऊंगी जो "श्रीरामकृष्णवचनामृत" खंड-1 में वर्णित है ! कथा में किंचित अश्लीलता प्रतीत हो सकती है पर ऐसे सिद्ध संत इसे इसी रूप में कह गए हैं और फिर तुम्हारे विवेक के दरवाज़ों पर दस्तक देने के लिए मुझे भी थोड़ी मर्यादा तोड़नी पड़ रही है! अब कथा सुनो!"

"एक बार एक गांव के लोगों ने देखा कि एक सियार दिन-रात एक साँड़ के पीछे-पीछे लगा रहता है! वह घास चरे या पानी पीये या आराम करे या एक गाँव से दूसरे गाँव की दूरी तय करे, सियार लगातार साथ लगा रहता था!

दरअसल वह सियार साँड़ के लटकते लाल अण्डकोशों को फल समझ रहा था और यही सोचकर उसके पीछे लगा रहता था कि कभी न कभी ये फल टपक जायेंगे और उसके हाथ लग जायेंगे! कहने की ज़रूरत नहीं कि सियार की उम्मीद कभी पूरी नहीं होनी थी, पर उसने उम्मीद नहीं छोडी !"

"तो वत्स! जो अंडभक्त होते हैं वे उसी सियार की कोटि के लोग होते हैं! उन्हें लगता रहता है कि एक न एक दिन मोदीजी के वायदे पूरे होंगे, घोषणाएँ रंग लायेंगी और भारत की तरक्की का फल उन्हें भी मिलेगा और उनकी ज़िंदगी खुशहाल हो जायेगी! तमाम जुमलेबाजियों के सामने आने के बाद भी उनकी मोदीजी से उम्मीद नहीं टूटती और वे उसी सियार की तरह मोदीजी के पीछे चलते रहते हैं! ऐसे ही भक्तों को विद्वज्जनों ने अंडभक्त की संज्ञा से विभूषित किया है!"

भक्त को कुछ देर तो बात समझने में लगी! फिर जैसे ही बात भेजे में घुसी, उसने भड़ककर पाँच फुट की ऊँची कूद और पाँच फुट की लम्बी कूद एक साथ ली और गली में उतरकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा! मैंने उससे कहा, "लॉकडाउन के समय सड़क पर हंगामा करोगे, फौरन पुलिस वाले आकर तशरीफ़ लाल कर देंगे और हवालात में ले जाकर बंद कर देंगे!" फिर भक्त एकदम से चुप हो गया और पीछे मुड़-मुड़ कर अग्निमय आँखों से घूरता हुआ अपने घर की ओर चला गया!

विशेष/वक्त ने किया क्या हसीं सितम, न खेल बचा न हम

डॉ. सोना चौधरी

गेम इन गेम-पार्ट 1

मतलब? मतलब ये कि यहां बर्बरता का शासन है। यहाँ कमजोर होकर चलने में सबकी ताकत का बोझा ढोना पड़ता है, ताकतवर होने के लिए कमजोरियों से समझौता करना पड़ता है। कहीं कुछ चुभता सा रहता है। कभी-कभी लगता है चारों तरफ फंस गई हूं। जहां उजाला था उसे छोड़कर जहां आ गई हूं वहां अंधेरा है, चारों और पेड़ों के घने झुरमुट हैं जो राह रोकते हैं और जहां सोचने-भर की जगह भी नहीं वहां भी काले जंगल हैं। सोचने की जो अकेली जगह मैं पहले घेर चुकी थी वे जंगल उस पर भी हमलावार हो रहे हैं। कुछ बंजर झाड़ियां सी उग आई हैं। इनमें कंटीली घास पनप रही है, सोचते-सोचते कई बार उद्विग्न हो जाती हूं। फिर और सोचने लगती हूं। सोचने की जगह नहीं पर सोचने से मुक्ति भी नहीं।

जैसे कभी-कभी अपने ही मांस में अपने नाखून गड़ाते रहने पर खाल की तीखी जलन में भी कुछ मिलता सा है। जैसे कोई अपनी ही हथेली पर बेंत लगाता है और कुछ हासिल करता है। खेलने का मैदान, उससे जुड़ी यादें। हम सब बात कर ही रहे थे कि अचानक आधी रात के आस-पास जोर से आवाजें सुनाई दीं। देर तक कुछ मसला चलता रहा। रात होने की वजह से पता नहीं चल पाया कि माजरा क्या है। लेकिन कुछ तो ऐसा था जो नहीं होना चाहिए था। पंजाब, मणिपुर व केरल के बीच का कुछ झगड़ा था। मणिपुर होस्ट था नेशनल गेम्स का। केरल के खिलाड़ियों ने पंजाब की एक खिलाड़ी को छेड़ दिया और उस घटना को रेप का नाम दे दिया गया। बदला लेने के नाम पर पंजाब के कुछ खिलाड़ियों ने केरल पर पलटवार कुछ उसी ढंग से किया। दोनों घटनाएं गेम्स कैम्पस में चर्चा का विषय बनी रहीं। हमारी टीम को भी हिदायत मिली कि डिनर के बाद कोई बाहर न निकले। आखिरी दिनों में मेल मिलाप पर भी पहरे लग गए। मजा तब आता था जब टीम इंचार्ज कैप्टन को सबके लिए उत्तरदायी बनाकर जाते और कैप्टन खुद ही सबसे पहले गायब हो जाती।

गेम इन गेम-पार्ट 2

इस तूफ़ान का आभास बहुत पहले मुझे हो गया था। वक्त और परिस्थिति, किरदार बाकी थे! हिन्दुस्तान हमारी आत्मा है और खिलाड़ी उसका मुकुट, लेकिन जिसका मुकुट ही तोड़ दिया जाए उस आत्मा के टुकड़े कब तक कितनी बार और किन-किन स्थानों से समेटेंगे और सच्चाई तो यह है कि समेट भी पाएंगे या नहीं यह भी कह पाना बेहद कठिन है!

जीवित इंसान इस बेगाने कहे जाने वाले अपने से दर्द से कब तक लड़ पायेगा!

मुर्दे तो हर कदम पर ये ही खेल खेल रहे हैं!

मुझे दर्द होता है, मुझे बुरा लगता है और मुझे घृणा भी होती है। मैं क्या करूं ?

धरना सिर्फ जंतर मंतर पर ही नहीं एक धरना और एक धारणा मेरे अंदर निरंतर चौबीसों घंटे चल रही है, मुझे सोये हुए एक अरसा हो गया। लगता है हम किस युग में हैं जहां सच बोलने की इतनी बड़ी सजा और झूठ का इतना सम्मान, आखिर कहाँ जाकर उठेंगे हम।

ये सवाल मेरी लेखनी के माध्यम से हर बेटी का होगा और हर उस खिलाड़ी का भी जो अपने खेल को ही अपना सब कुछ मानता आया हो!

वेदना, आंसू और सड़कों पर नारे लगाकर भी हम हुकमरानों की मूर्छा तोड़ने मैं नाकामयाब हैं! मैं जब भी कोई आवाज अपने लेखन से या अपने वक्तव्य से किसी भी जुल्म के खिलाफ उठाती हूं तो उसे मेरी निजी ज़िंदगी से जोड़ कर आकलन किया जाता है ! तो आज मैं ये एलान करती हूँ की हाँ है ये मेरी ज़िंदगी की लड़ाई है, ये मेरी मुहिम जो मैने बरसों पहले शुरू की थी ! हर वो लड़ाई मेरी ही है जहां खिलाड़ी का शोषण हो। हर वो लड़ाई मेरी है जहाँ नारी का अपमान हो..

और हर वो लड़ाई मेरी है जहां बच्चों को उनका हक़ न मिलता हो!

(डॉ. सोना चौधरी भारत की महिला फुटबॉल टीम की पूर्व कप्तान है, उनका उपन्यास गेम इन गेम खिलाड़ियों के यौन शोषण पर करीब सात वर्ष पूर्व लिखा गया था।)